M.A. SEM-I Paper I

ध्वनि परिवर्तन के कारण —

ध्वनि परिवर्तन के निम्नलिखित कारण है —

(1) प्रयत्नलाघव या मुखसुख — बोलने में सुविधा के कारण व्यक्ति अल्प प्रयत्न से हीं अपनी बात कहना चाहता है इसी कारण कठिन ध्वनियाँ, या जिसके कारण मुख को असुविधा होती है, ऐसी ध्वनियों का या तो उच्चारण नहीं होता है, या अपूर्ण उच्चारण होता है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी के Night में gh का उच्चारण नहीं होता है।

(2) अनुकरण की अपूर्णता — भाषा अनुकरण से सीखी जाती है। स्वर यंत्र अपूर्णता विभिन्नता आदि के कारण अनुकरण कभी पूर्ण नहीं हो पाता है। जैसे सिगनल > सिंगल। किंतु यह भिन्नता इतनी सूक्ष्म होती है कि उच्चारण की इस भिन्नता का पता हीं नहीं चलता है।

(3) अज्ञान — अज्ञान के कारण भी उच्चारण पूर्ण नहीं हो पाता है। इसी अज्ञान के कारण ध्वनि में परिवर्तन होने लगता है।

रूपया > नुपया

(4) भावुकता — भावुकता, प्रेम तथा आवेश के कारण कभी कभी व्यक्ति शब्दों के विभिन्न प्रकार से उच्चारण करता है। यही शब्द कभी कभी अधिक प्रयोग के कारण भाषा में ध्वनि परिवर्तन ला देते हैं। जैसे — शिवराम > शिवू

(5) भ्रामक व्युत्पत्ति — भ्रामक व्युत्पत्ति का मुख्य कारण अज्ञान हीं होता है। नया शब्द जब परिचय में आता है, मनुष्य उससे मिलते जुलते पूर्व परिचित शब्द से उसको मिलाकर देखता है और अनायास हीं ध्वनि परिवर्तन कर देता है —

Scanned with CamScanner

इन्तकाल > अन्तकाल
लाइब्रेरी > रायबरेली

(6) वाग्यन्त्र की भिन्नता का दोष — ध्वनि उत्पत्ति के अवयवों की भिन्नता के कारण भी ध्वनि परिवर्तन होता है जैसे — कुछ व्यक्ति श, ष, स का उच्चारण अलग-अलग नहीं कर पाते हैं।

(7) सामाजिक प्रभाव — भाषा समाज की संपत्ति है अतः समाज की गतिविधियों के साथ भाषा भी प्रभावित होती है। सामाजिक जागरूकता के कारण 25 मई 1956 से बनारस, वाराणसी कहा जाने लगा।

(8) भौगोलिक भिन्नता — उष्ण और शीत प्रधान स्थानों के व्यक्तियों के उच्चारण में प्रायः अन्तर रहता है। समृद्ध स्थान के व्यक्तियों और असमृद्ध भूभाग तथा ठेठ देहात में रहनेवाले व्यक्तियों की ध्वनियों के उच्चारण में अन्तर रहता है। गर्म प्रदेश वाले लोगों का मुख अधिक खुलता है जबकि शीत प्रदेश वाले व्यक्ति का मुख ठंड के कारण कम खुलता है।

(9) ऐतिहासिक परिस्थितियाँ या काल का प्रभाव — स्थान देश और जलवायु आदि का ध्वनि परिवर्तन पर प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार काल का प्रभाव भी ध्वनि परिवर्तन पर पड़ता है। प्राचीन वैदिक ध्वनियों के उच्चारण में अन्तर है।

(10) लेखन — भाषा के लिखित रूप के कारण भी ध्वनियों में परिवर्तन हो जाता है। जैसे — Rama, Gupta, Misra, राम, गुप्त, मिश्र हैं, किन्तु आज ये रामा, गुप्ता, मिश्रा बन गए हैं।

(11) श्रवणेन्द्रिय की विभिन्नता — प्रत्येक व्यक्ति की श्रवणेन्द्रिय दूसरे से भिन्न होती है, अतः

Date
Page

उसे कुछ भिन्न ध्वनि सुनाई पड़ती है। अपने सुनने के अनुरूप ध्वनि परिवर्तन हो जाता है।

(12) सादृश्य – एक ध्वनि से साम्य होने के कारण दूसरी ध्वनि में परिवर्तन हो जाता है। जैसे द्वादश के साम्य पर एकदस > एकादश हो जाता है।

(13) ध्वनियों का परिवेश – किसी ध्वनि में होनेवाले परिवर्तन कभी-कभी आस पास की ध्वनियों के कारण होता है। जैसे संस्कृत 'कुञ्चिका' में 'च' अघोष है, किन्तु 'ञ्' और 'इ' स्वर घोष हैं। दो घोषों के बीच की अघोष ध्वनि 'च' इसलिए स्वयं घोष होकर 'ज' हो गयी और कुञ्चिका का हिन्दी रूप हुआ 'कुंजी'।

(14) ध्वनियों की प्रकृति – कुछ ध्वनियाँ सबल होती हैं, कुछ निर्बल। साथ साथ आने पर प्रायः निर्बल का लोप हो जाता है। जैसे – अग्नि > आग, कर्म > काम।

(15) बलाघात – बलाघात के कारण ध्वनि परिवर्तन हो जाता है। जैसे – बाजार > बजार

(16) बोलने की शीघ्रता – बोलने की शीघ्रता के कारण ध्वनि परिवर्तन हो जाता है। जैसे –
पंडित जी > पंडीजी

(17) शब्दों की असाधारण लम्बाई – लम्बे शब्द या पद प्रायः छोटे बना लिए जाते हैं। जैसे –
जय राम जी की > जैराम

(18) सहजीकरण – दूसरी भाषाओं के अज्ञात शब्दों को अपनी भाषा की ध्वन्यात्मक प्रकृति के अनुरूप बनाने के लिए जान बूझकर परिवर्तित कर लिया जाता है। जैसे – एकेडमी > अकादमी
ट्रेजडी > त्रासदी
कॉमेडी > कामदी

Scanned with CamScanner

(19) राजनीतिक प्रभाव - राजनीतिक प्रभाव के कारण कलिकाता > कलकत्ता ~~[illegible]~~ गया।

(20) विदेशी ध्वनियां - विदेशी ध्वनियाँ भी भाषा परिवर्तन का कारण बनती हैं। क्योंकि दूसरी भाषा में वे ध्वनियाँ उसी रूप में स्वीकार नहीं की जाती हैं। अतः ध्वनि में परिवर्तन हो जाता है। जैसे- अंग्रेजी की अनेक ध्वनियों का हिन्दीकरण कर लिया गया है। जैसे रिपोर्ट से रपट, अगस्ट से अगस्त आदि।

ध्वनिपरिवर्तन के अनेक कारण हैं जो कभी एकाकी रूप में कभी अनेक सहयोगी कारणों के साथ भाषा और ध्वनि में परिवर्तन कर देते हैं। डा० भोलानाथ तिवारी ने लिखा है - "एक ध्वनि के परिवर्तन में अधिकतर एक से अधिक कारण कार्य करते हैं और इसलिए स्पष्ट रूप से कारणों की ओर संकेत करना संभव नहीं होता। इन कारणों के आधार पर भविष्य के विषय में निश्चितता के साथ हम कुछ नहीं कह सकते। यह नहीं कहा जा सकता कि अमुक ध्वनि कल अमुक रूप धारण करेगी या अमुक ध्वनि में परिवर्तित हो जाएगी। यह तो अतीत की सामग्री के आधार पर अतीत का विश्लेषण मात्र है। यह आवश्यक नहीं कि आनेवाले परिवर्तन भी इसी पर चलें। साथ ही भूत के सम्बन्ध में भी यह नहीं कहा जा सकता है कि जहाँ-जहाँ अमुक कारण उपस्थित होगा, वहाँ वहाँ अमुक परिवर्तन अवश्य होगा। इसका कारण यह है कि ध्वनियों के पथ में अनेक व्याघात आते रहते हैं और उन सभी का ध्वनि के विकास या परिवर्तन पर प्रभाव पड़ता है।